IJAER/ November-December 2024/Volume-13/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

भारतीय परम्परागत परिधान : साड़ी

शालिनी आल्हा
सह आचार्य
चौ. ब.रा.गो.राज.कन्या महाविद्यालय
श्रीगंगानगर

परिचय :–

भारत विविध संस्कृतियों और परम्पराओं का देश है। भारतीय संस्कृति के सबसे महत्त्वपूर्ण परिधानों में से एक परिधान साड़ी है। सदियों से भारतीय विरासत साड़ी सिर्फ कपड़े का एक टुकड़ा नहीं बल्कि यह एक महिला की पहचान, सुन्दरता और शान को अभिव्यक्त करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो इसका इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। भारतीय महाकाव्यों जैसे रामायण और महाभारत में भी इसका उल्लेख मिलता है। हथकरघे पर तैयार यह वस्त्र अपनी विशिष्टता के कारण लोकप्रिय हुआ। परम्परागत रूप से यह भारतीय संस्कृति को दर्शाता है। भारत के अलग–अलग राज्यों में बनने वाली साड़ीयाँ अपनी अलग पहचान रखती है। इसी पारम्परिक पहचान व स्वाद के साथ इन्हें पहना व अपनाया गया है जो न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में प्रसिद्ध है।

मुख्य शब्द :– संस्कृति, किनखाब, हथकरघा, ब्रोकेड, जैकार्ड, शटिका, अंतरिया, उत्तरिया।

भारतीय महिलाओं द्वारा अनेक पारम्परिक अवसरों पर पहना जाने वाला मुख्य परिधान साड़ी है। यह महिलाओं के परिधान की सूची का अनिवार्य हिस्सा है। जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित किया जाता है। भारतीय संस्कृति में साड़ी की जड़ों अत्यन्त गहरी है। यह पहनावे के साथ–साथ बड़ों के प्रति सम्मान व पारिवारिक मूल्यों का भी प्रतीक है।

साड़ी शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शब्द 'सादी' से हुई है। जिसका अर्थ है– ''कपड़े की एक पट्टी''। संस्कृत व बौद्ध साहित्य में इसका उल्लेख सटिका और जटाक के रूप में किया गया है। साड़ी का इतिहास 2800 ईसा पूर्व के आसपास सिंधु घाटी सभ्यता के साथ शुरू हुआ माना जाता है। इस सभ्यता के प्राप्त साक्ष्यों में साड़ी का अस्तित्व का पता चलता है। यह मानव द्वारा पहने जाने वाले परिधानों की शैली में सबसे पुरानी शैली मानी जाती है। प्राचीन काल से ही महिलाओं द्वारा अपने शरीर को ढ़कने व सुन्दर दिखने के लिए साड़ी पहनी जाती रही है। प्रारम्भिक समय में इस परिधान को मुख्य रूप से दक्षिण भारत में उपयोग में लाया गया। जहाँ से यह पारम्परिक पोशाक के रूप में पूरे भारत में पहनी जाने लगी। बुनाई कला के विकास के साथ ही महिलाओं द्वारा धारण किए जाने वाले इस परिधान का विकास हुआ। जिसे उस समय शटिका कहा जाता था।

यह तीन टुकड़ों या भागों वाली पोशाक थी। जिसमें अंतरिया, उत्तरिया व स्तम्भा पट्टा शामिल होता है। अंतरिया कमर से नीचे का वस्त्र है। वहीं उत्तरिया– कंधे या सिर पर पहना जाने वाला आँचल या घुँघट है। और स्तम्भ पट्टा वक्ष स्थान पर पहना जाता था। इन तीनों ही वस्त्रों में समय के साथ बदलाव आए। जैसे– अंतरिया जो पहले धोती की

तरह पैरों के बीच से निकलता हुआ पहना जाता था, बाद में घाघरे व लहंगे में बदल गया। उत्तरिया जो कंधे व सिर को ढ़कने के लिए प्रयोग में आता था, आज दुपट्टे के नाम से जाना जाता है। और बिना सिला हुआ स्तन पट्टा बाद में सिले हुए परिधान चोली/ब्लाउज में विकसित हुआ।

परम्परागत रूप से भारतीय हथकरघा साड़ी बुनाई भारत की पहचान रही है। उस समय प्राकृतिक रेशों जैसे– कपास, रेशम से तैयार वस्त्र को प्राकृतिक रंग जैसे– हल्दी, लाख, इंडिगो आदि से रंगे जाते थे और शरीर पर लपेटते हुए पहने जाते थे। साड़ी की औसतन लम्बाई 6 से 9 मीटर होती है। जिसको नीचे पेटिकोट पर पहना जाता है और शरीर के ऊपरी हिस्से पर चोली या ब्लाउज के साथ पहना जाता है। इसका एक हिस्सा कमर से जोड़ते हुए पूरी लम्बाई को शरीर पर व्यवस्थित रूप से पहना जाता है। भारत में बनी परम्परागत साड़ियाँ विश्व भर में लोगों द्वारा पसन्द की जाती है। यह परम्परागत परिधान विविधतापूर्ण है और हर राज्य की अपनी अलग विशेषता है।

1. बालूचरी :–

पश्चिमी बंगाल के मुर्शीदाबाद में रेशम से बनी अत्यन्त खूबसूरत ब्रोकेड साड़ी बालूचरी बूटीदार के नाम से जानी जाती थी। बालूचरी साड़ी सबसे ज्यादा कलात्मक वस्त्र था। परम्परागत वस्त्रों का नाम आमतौर पर उनके निर्माण स्थान पर पड़ता है। इसी तरह बालूचर भी मुर्शीदाबाद के पास स्थित एक छोटा सा कस्बा है। यही वह केन्द्रीय स्थान था जिसके नाम पर इस वस्त्र को नाम दिया गया। धीरे–धीरे इसके आसपास के स्थानों पर भी बालूचरी का निर्माण होने लगा। इस बेहद खूबसूरत वस्त्र का आधार, गहरे रंग जैसे लाल, महरून, चॉकलेट इत्यादि का होता है और इसके ऊपर हल्के रंग (क्रीम, पीला, हल्का हरा, नारंगी इत्यादि) से डिजाइन बनाए जाते थे।

इस साड़ी की खास हिस्सा इसका आँचल है। जिसे सबसे ज्यादा सजाया जाता है। आँचल के केन्द्र में तोरंग के डिजाइन पंक्तिबद्ध तरीके से व्यवस्थित होते हैं। साथ ही मानव आकृति के डिजाइन होते हैं। जो मुगल काल के प्रभाव को दिखाता है। इन कलात्मक चित्रों में मानव आकृति को परसीयन वस्त्रों में घुड़सवारी करते हुए आपस में बातचीत करते हुए, हाथ में गुलाब लिये हुए, हाथ में पक्षी पकड़े हुए व हुक्का पीते हुए दिखाए जाते थे। आँचल पर यह डिजाइन केन्द्रीय तोरंग डिजाइन के चारों तरफ आयताकार आकृति में बनाए जाते थे। समय के साथ–साथ इसमें भी बदलाव आया। मुगलकाल के बाद ब्रिटिश काल में मानव आकृतियाँ हाथ में वाइन का गिलास पकड़े हुए, गाड़ी, घोड़ागाड़ी या किसी अन्य सवारी पर और पालकी पर दिखाई देने लगी।

इन्हीं कलात्मक डिजाइन के चलते बालूचरी के वस्त्र की बुनाई प्रक्रिया अत्यन्त जटिल एवं विस्तृत थी। हथकरघे पर बनाते हुए लगभग एक दर्जन बुनकर काम करते थे। उदाहरण के लिए आँचल के लिए दो, बॉर्डर या किनारी के लिए दो, शुरूआत के हिस्से और अन्त के लिए एक–एक नक्शा तैयार किया जाता था। कभी–कभी एक साड़ी के लिए चौदह नक्शे भी बनाए जाते थे। मुश्किल डिजाइन बनाने में छः माह का समय भी लग जाता था। एक बार करघा तैयार

होने के बाद पाँच से तीस साड़ियां बना ली जाती थी। करघा तैयार करने के लिए उच्च तकनीकी कौशल की जरूरत होती थी। डिजाइन बनाने में अतिरिक्त बाने के धागों का इस्तेमाल करते थे।

2. बनारसी ब्रोकेड (किनखाब) :–

ब्रोकेड रेशम व शुद्ध सोने व चाँदी के रेशों से तैयार वस्त्र है। जिस पर उभरे हुए डिजाइन होते हैं, इसे किनखाब भी कहते हैं। जिसका अर्थ है– ''सपनों का वस्त्र''। यह भारत का सबसे शानदार मनमोहक पारम्परिक वस्त्र है। यद्यपि भारत के कई हिस्सों में ब्रोकेड वस्त्र बनाए जाते हैं। परन्तु बनारस में बनने वाले ब्रोकेड की अपनी अलग पहचान है। बनारसी ब्रोकेड को बनाने वाले बुनकर मुस्लिम समुदाय के हैं और इन्हें कारीगर कहा जाता है। जिस कार्यशाला में यह बनता है, उसे वे कारखाना कहते हैं। एक स्थानीय कथा के अनुसार चौदहवीं शताब्दी में गुजरात में आग लगने के कारण वहाँ से कारीगर बनारस आ गए और यहाँ पर इस कला का विस्तार हुआ।

इस वस्त्र को बनाने के लिए कच्ची सामग्री के लिए रेशम की आवश्यकता होती है और दूसरा सोने व चाँदी के धागे जिसे कालाबट्टू कहते हैं की जरूरत होती है। इसे ज़री भी कहा जाता है। ब्रोकेड बनाने की प्रक्रिया अत्यन्त जटिल है। एक भारी डिजाइन बनाने में 6 से 8 माह का समय लग जाता था। साड़ी में बनने वाले डिजाइन को पहले नक्शाबंद या डिजाइन कागज पर बनाते हैं फिर उसे सूती धागों के इस्तेमाल से बनाया जाता था। इस नक्शे के अन्दर रंग संयोजन तथा कालाबट्टू के निधार्रण का स्थान भी बनाया जाता था। फिर इस नक्शे को ताने के धागों के ऊपर फिट करके डिजाइन के अनुसार ताने व बाने के धागों को ऊपर व नीचे उठाने का काम दूसरा व्यक्ति करता था। वर्तमान में इस जटिल डिजाइन के नक्शों का स्थान जैकार्ड ने ले लिया है। इसी तरह प्रारम्भिक समय में प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल रंगाई के लिए होता था। जो कि बाद में क्षारीय रंगों में बदल गया। इन रंगों के प्रयोग से समय तो बचता ही था साथ ही विविधता भी मिलती थी। बनारसी ब्रोकेड में पीला, नीला, लाल, हरा, काला, संतरी रंग के हल्के गहरे सब तरह के रंग देखने को मिलते हैं। रंगों के साथ–साथ इसमें डिजाइन में भी विविधता देखने को मिलती है। ब्रोकेड में बनाए जाने वाले डिजाइन को मुख्यतः पाँच भागों में बांटा गया है–

1. **तस्वीर–** इसके अन्तर्गत पौराणिक कथाओं से संबंधित चित्रों, जानवरों, पक्षियों के चित्र बनाए जाते थे।

2. **फुलवार–** इसके अन्तर्गत फूल पत्तियों की बेल आती थी। जैसे– गैंदे की व गुजदाउदी की बेल।

3. **बुटीदार–** इसमें बूटी व बूटा डिजाइन का इस्तेमाल करते थे। जो कि केवल एक फूल की तरह होता था और आपस में जोड़ा नहीं जाता था। उदाहरण के लिए बादामा बूटी, कैरी बूटी, अशर्फी बूटी, चाँद–तारा बूटी, तोता बूटी, मोर बूटी, झुमका बुटी, लतीफा बूटी इत्यादि।

4. **ज्यमीतिय–** सीधी, आड़ी, तिरछी रेखाओं से बने डिजाइन इसके अन्दर शामिल किए गए हैं। जिसमें जाल के अन्दर बुटियाँ बन्द की जाती थी। उदाहरण– चूड़ी जाल, धनुष जाल इत्यादि।

5. शिकारगाह– इसमें जानवरों व पक्षियों के डिजाइन बनाए जाते थे।

इन परम्परागत डिजाइन में भी समय के साथ बदलाव आया। कला को जीवित रखने के लिए और 20वीं शताब्दी की शुरूआत में यूरोपियन, माँग को पूरा करने के लिए विक्टोरियन सेंपल किताब से डिजाइन लेकर बदलाव किया गया। इसके बाद आसाम, बंगाल की लोक कथाओं से प्रेरित डिजाइन व मुगल, राजस्थानी और पहाड़ों की तस्वीरें भी आवश्यकतानुसार जुड़ती गई। वर्तमान में बनारसी ब्रोकेड साडियों से शुद्ध सोने व चाँदी के धागे गायब हो चुके हैं। परन्तु फिर भी यह साड़ी अमीर घरानों में परम्परागत उत्सवों व शादियों में पहना जाने वाला मुख्य परिधान है।

3. चंदेरी साड़ी :–

मध्यप्रदेश ग्वालियर के पास एक कस्बा चन्देर में बनने वाली खूबसूरत चंदेरी साड़ीयाँ अपने मनमोहक डिजाइन के कारण विश्व प्रसिद्ध है। परम्परागत रूप से यह सूती धागों (ताने व बाने) से बनती थी, परन्तु वर्तमान में रेशम के ताने व कपास के बाने का इस्तेमाल किया जाता है। न केवल भारत में बल्कि इटली, बैल्जियम व जर्मनी में इसका निर्यात किया जाता है। विदेशों में इस वस्त्र से बने टेबल कवर, कुशन कवर व नेप्किन काफी प्रसिद्ध है।

चंदेरी साड़ी बनाने के लिए बुनकर हथकरघे पर कपास व रेशम दोनों धागों का इस्तेमाल करते हैं। इसमें सफेद व क्रीम जैसे हल्के रंगों से साधारण फूलों वाले डिजाइन बनाए जाते हैं। फूलों के अलावा, रेखाएँ, पत्तियाँ, कलियाँ, बिन्दू व ज्यमीतिय डिजाइन देखे जाते हैं। आपस में मिलते हुए डिजाइन आधार, आँचल व बॉर्डर पर दिखाई देते हैं। जटिल डिजाइन के लिए दो बुनकर एक साथ काम करते हैं और अर्द्धपारदर्शी डिजाइन बनाने के लिए अतिरिक्त ताने व बाने के धागों का इस्तेमाल किया जाता है। अलग–अलग आकृतियों को आँचल व बॉर्डर पर बनाने के लिए नक्शा तैयार किया जाता है।

4. जामदानी :–

डाका में बनने वाले सभी वस्त्रों में सबसे अधिक सुन्दर व प्रसिद्ध जामदानी है। शुरूआती काल में राजघराने व धनी समुदाय को एक अत्यन्त सजावटी वस्त्र उपलब्ध कराने के लिए इसका निर्माण किया गया। परन्तु बाद में इससे साडियाँ बनाई जाने लगी। मलमल की ये साडियाँ अपनी जटिल व सुन्दर डिजाइन की वजह से विश्व भर में प्रसिद्ध है। इसे बनाने का तरीका टेपेस्ट्री से मिलता जुलता है। डिजाइन की आकृति को बुनाई के समय डाला जाता है जिससे यह कढ़ाई जैसा दिखाई देता है। बुनाई के कार्य के लिए एक समय में दो बुनकर काम करते थे। ताकि समय बचे और बुनाई का कार्य आसान हो जाए। बुनाई के लिए साधारण करघे का उपयोग किया जाता है। बुनाई की शुरूआत साधारण ही होती है। डिजाइन की आकृति बनाने के लिए उस स्थान पर बाँस के टुकड़े से बनी हुई सुई से आकृति बनाई जाती है। इस साड़ी में बनाए जाने वाले डिजाइन अनेक नामों से जाने जाते हैं। जैसे– बूटीदार, तीरछा, झालर, पन्ना–हजारा,

फुलवार, तोरेदार आदि। पल्लव/आँचल पर साधारणतः बनाई जाने वाली आकृतियों में पक्षी जैसे मोर या हँस और जानवर व मानव आकृति होती है। किनारों पर बड़े–बड़े डिजाइन होते हैं।

जामदानी साड़ी का आधार का कपड़ा कपास के रेशे से बना होता है और डिजाइन के लिए रेशम या कपास तथा ज़री के धागों का प्रयोग किया जाता है। सफेद, काले व स्लेटी रंग के आधार पर, चटकीले व चमकीले रंग से डिजाइन बनाए जाते हैं।

निष्कर्ष :–

भारत की ये परम्परागत साड़ीयाँ यहाँ की संस्कृति की शान रही है और सदियों से यहाँ के लोगों के लिए सम्मान का प्रतीक बनी रही। ब्रिटिश काल में धीरे–धीरे इन कलाओं का पतन प्रारम्भ हुआ। बाहय सहयोग व संरक्षण नहीं मिलने और स्थानीय बाजार में उचित मूल्य नहीं मिल पाने के कारण हथकरघा बुनकरों का स्थान मशीनों ने ले लिया। वास्तविक डिजाइन का स्थान कृत्रिम डिजाइन ने ले लिया और परम्परागत डिजाइन खत्म हो गए। लेकिन फिर भी वर्तमान समय में बनाए जाने वाली साडीयाँ भारतीय महिलाओं के परिधानों में अपना विशेष स्थान रखती है।

सन्दर्भ सूची :–

1- Mahapatra, Dr. N. N., Sarees of India, Woodhead Pulbishing India in Textiles.

2- Gillow John and Barnard Nicholas, Indian Textiles, Thomes and Hudson Publications

3- www.sundarisilks.com

4- Saha Balaram, The Rich Heritage of Traditional Sarees and their importance in Modern Times

5- https:/hi.wikipedia.org साड़ी– विकिपीड़िया

6. प्रभात खबर, भारतीय साड़ियों की सुन्दर दुनिया, 2 अगस्त 2024